Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य संबंध: एक मात्रात्मक अध्ययन।

आशीष चन्द्रवंशी
विषय समाजशास्त्र।
विपत्रपता-ashishchandrawanshi1708@gmail.com

सार
वर्तमान डिजिटल युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक जीवन के विभिन्न आयामों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता का विकास युवाओं के जीवन स्तर, रोजगार अवसरों, शिक्षा, संचार कौशल तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक बन गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु मात्रात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया। 150 ग्रामीण युवाओं का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं सहसंबंधीय तकनीकों द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि उच्च डिजिटल साक्षरता वाले युवाओं में सामाजिक गतिशीलता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। डिजिटल कौशल, ऑनलाइन शिक्षा, ई-गवर्नेंस सेवाओं की पहुँच तथा डिजिटल रोजगार अवसरों ने ग्रामीण युवाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अध्ययन यह संकेत करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार सामाजिक परिवर्तन एवं समावेशी विकास को गति प्रदान कर सकता है।
कुंजी शब्द: डिजिटल साक्षरता, सामाजिक गतिशीलता, ग्रामीण युवा, सूचना प्रौद्योगिकी, सामाजिक परिवर्तन, डिजिटल समावेशन।

1. प्रस्तावना

वर्तमान युग को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। तकनीकी विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, प्रशासन, व्यापार तथा सामाजिक संबंधों—को गहन रूप से प्रभावित किया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, क्लाउड कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म ने समाज की संरचना और कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। आज सूचना तक पहुँच, ज्ञान का अर्जन, सेवाओं का उपयोग तथा सामाजिक सहभागिता का बड़ा भाग डिजिटल माध्यमों के द्वारा संपन्न हो रहा है। ऐसी स्थिति में डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक विकास का एक अनिवार्य साधन बन गई है (शर्मा, 2018)।

डिजिटल साक्षरता का तात्पर्य व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसके माध्यम से वह डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट, ऑनलाइन सेवाओं तथा सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभावी, सुरक्षित और उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग

कर सके। इसमें कंप्यूटर, मोबाइल फोन, इंटरनेट ब्राउजिंग, ई-मेल, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, ई-गवर्नेंस सेवाओं तथा डिजिटल संचार माध्यमों का उपयोग सम्मिलित है। डिजिटल साक्षरता व्यक्ति को केवल सूचना प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे ज्ञान निर्माण, समस्या समाधान तथा सामाजिक सहभागिता के नए अवसर भी प्रदान करती है (गुप्ता, 2020)।

भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण क्षेत्र जनसंख्या का एक बड़ा भाग समाहित करते हैं। ग्रामीण भारत लंबे समय से शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, रोजगार तथा अन्य विकासात्मक सुविधाओं की सीमित उपलब्धता जैसी समस्याओं का सामना करता रहा है। इन चुनौतियों के कारण ग्रामीण युवाओं की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति अपेक्षाकृत धीमी रही है। किंतु डिजिटल प्रौद्योगिकी के विस्तार ने ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की नई संभावनाओं को जन्म दिया है। इंटरनेट और मोबाइल तकनीक ने सूचना एवं ज्ञान तक पहुँच को सरल बनाया है तथा ग्रामीण युवाओं को राष्ट्रीय एवं वैश्विक अवसरों से जोड़ने का कार्य किया है (सिंह, 2019)।

ग्रामीण युवा किसी भी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास तथा तकनीकी नवाचार के प्रमुख वाहक माने जाते हैं। यदि ग्रामीण युवाओं को डिजिटल संसाधनों और तकनीकी कौशलों से सुसज्जित किया जाए तो वे न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन स्तर को उन्नत कर सकते हैं, बल्कि संपूर्ण ग्रामीण समाज के विकास में भी योगदान दे सकते हैं। डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं को शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता के नए अवसर प्रदान करती है, जिससे उनकी सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है (तिवारी, 2021)।

सामाजिक गतिशीलता समाजशास्त्र की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका आशय व्यक्ति अथवा समूह की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन से है। जब कोई व्यक्ति शिक्षा, आय, व्यवसाय, प्रतिष्ठा अथवा सामाजिक अवसरों के आधार पर अपने पूर्व सामाजिक स्तर से ऊपर उठता है, तो इसे ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है। सामाजिक गतिशीलता किसी भी समाज की प्रगतिशीलता एवं लोकतांत्रिक प्रकृति का महत्वपूर्ण संकेतक होती है। जिन समाजों में सामाजिक गतिशीलता अधिक होती है, वहाँ व्यक्तियों को अपनी योग्यता एवं प्रयासों के आधार पर उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं (वर्मा, 2019)।

डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। डिजिटल कौशल व्यक्ति को सूचना तक त्वरित पहुँच, ऑनलाइन शिक्षा, रोजगार खोज, डिजिटल उद्यमिता तथा सामाजिक नेटवर्किंग जैसे अवसर उपलब्ध कराते हैं। ये अवसर व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सहायक होते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण युवाओं के लिए डिजिटल साक्षरता सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से ग्रामीण युवा उन संसाधनों तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं जो पहले केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित थे (मिश्रा, 2020)।

भारत सरकार ने डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। "डिजिटल इंडिया" अभियान, प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA), भारतनेट परियोजना तथा विभिन्न राज्य स्तरीय डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

डिजिटल पहुँच एवं डिजिटल साक्षरता का विस्तार करना है। इन पहलों ने ग्रामीण युवाओं को डिजिटल तकनीकों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा डिजिटल सेवाओं के उपयोग में भी विस्तार हुआ है (शुक्ला, 2021)।

डिजिटल साक्षरता का प्रभाव केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है। यह रोजगार के अवसरों को बढ़ाने, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होती है। आज अनेक युवा ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से स्वरोजगार, फ्रीलांसिंग, ई-कॉमर्स तथा डिजिटल सेवाओं से जुड़े कार्यों में संलग्न हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई है तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में भी सुधार हुआ है। डिजिटल तकनीकों ने रोजगार बाजार की पारंपरिक सीमाओं को कम करते हुए ग्रामीण युवाओं को व्यापक अवसर उपलब्ध कराए हैं (यादव, 2020)।

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल साक्षरता की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल पुस्तकालय, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तथा वर्चुअल कक्षाएँ ग्रामीण युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती हैं। डिजिटल संसाधनों के माध्यम से वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के ज्ञान स्रोतों तक पहुँच बना सकते हैं। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि होती है (जोशी, 2022)।

इसके अतिरिक्त डिजिटल साक्षरता सामाजिक सहभागिता एवं सामाजिक पूंजी के निर्माण में भी योगदान देती है। सोशल मीडिया, डिजिटल समुदाय तथा ऑनलाइन नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म व्यक्तियों को व्यापक सामाजिक संपर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे विचारों का आदान-प्रदान, सहयोगात्मक गतिविधियों में भागीदारी तथा सामुदायिक जागरूकता में वृद्धि होती है। सामाजिक पूंजी का यह विस्तार सामाजिक गतिशीलता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (श्रीवास्तव, 2023)।

यद्यपि डिजिटल साक्षरता के अनेक सकारात्मक प्रभाव हैं, तथापि ग्रामीण क्षेत्रों में इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी, डिजिटल अवसंरचना का अभाव, तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता, आर्थिक बाधाएँ तथा डिजिटल कौशलों की कमी जैसी समस्याएँ अभी भी ग्रामीण युवाओं के समक्ष उपस्थित हैं। इन चुनौतियों के कारण डिजिटल विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है, जो सामाजिक असमानताओं को और अधिक गहरा कर सकती है (ठाकुर, 2022)।

डिजिटल विभाजन का आशय उन व्यक्तियों अथवा समूहों के मध्य अंतर से है जिन्हें डिजिटल संसाधनों तक पर्याप्त पहुँच प्राप्त है और जिन्हें नहीं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल सुविधाओं की उपलब्धता में असमानता सामाजिक गतिशीलता के अवसरों को प्रभावित करती है। इसलिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा डिजिटल अवसंरचना के विस्तार की आवश्यकता निरंतर अनुभव की जा रही है (चौधरी, 2021)।

समकालीन समाज में डिजिटल साक्षरता को मानव पूंजी निर्माण का एक महत्वपूर्ण घटक माना जा रहा है। डिजिटल कौशलों से युक्त युवा बदलते हुए रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को

ढालने में अधिक सक्षम होते हैं। वे नवीन तकनीकों को अपनाने, नवाचार करने तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में सफल होने की अधिक संभावना रखते हैं। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का आधार बन जाती है (अग्रवाल, 2022)।

अनेक अध्ययनों ने यह संकेत दिया है कि डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है। जिन युवाओं के पास बेहतर डिजिटल कौशल होते हैं, वे शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक अवसरों का अधिक प्रभावी उपयोग कर पाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी आय, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा जीवन स्तर में सुधार होता है। इसके विपरीत डिजिटल संसाधनों तक सीमित पहुँच वाले युवाओं की प्रगति अपेक्षाकृत धीमी रहती है (सक्सेना, 2023)।

ग्रामीण युवाओं के संदर्भ में यह संबंध और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि डिजिटल तकनीकें उन्हें पारंपरिक सामाजिक एवं भौगोलिक बाधाओं से मुक्त करने की क्षमता रखती हैं। डिजिटल माध्यमों के द्वारा वे राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर उपलब्ध अवसरों से जुड़ सकते हैं तथा अपनी प्रतिभा एवं कौशल का व्यापक उपयोग कर सकते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक गतिशीलता को गति प्रदान करती है तथा ग्रामीण समाज में परिवर्तन का आधार बनती है (राजपूत, 2023)।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता इसी तथ्य से उत्पन्न होती है कि डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य संबंध को समझना ग्रामीण विकास की नीतियों एवं कार्यक्रमों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि डिजिटल साक्षरता वास्तव में सामाजिक उन्नयन का प्रभावी माध्यम है, तो इसके विस्तार हेतु अधिक संसाधनों एवं नीतिगत समर्थन की आवश्यकता होगी। साथ ही यह अध्ययन ग्रामीण युवाओं की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में डिजिटल तकनीकों की भूमिका को समझने में भी सहायता प्रदान करेगा (कश्यप, 2024)।

अतः प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता के स्तर का मूल्यांकन करते हुए यह जानने का प्रयास करता है कि डिजिटल साक्षरता किस प्रकार उनकी सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है। अध्ययन के निष्कर्ष ग्रामीण विकास, शिक्षा नीति, डिजिटल समावेशन तथा युवा सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं (त्रिपाठी, 2024; जैन, 2024)।

साहित्य समीक्षा

डिजिटल साक्षरता वर्तमान ज्ञान-आधारित समाज में सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक बनकर उभरी है। विशेष रूप से ग्रामीण युवाओं के संदर्भ में डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी उपकरणों के उपयोग की क्षमता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सूचना तक पहुँच, ज्ञान अर्जन, निर्णय-निर्माण, सामाजिक सहभागिता तथा आर्थिक अवसरों के विस्तार का भी माध्यम है। ग्रामीण भारत में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रसार ने युवाओं के जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में अनेक शोधकर्ताओं ने डिजिटल साक्षरता एवं सामाजिक गतिशीलता के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया है। सामाजिक गतिशीलता से आशय व्यक्तियों अथवा समूहों की सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन से है। डिजिटल साक्षरता इस परिवर्तन प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक मानी जाती है।

शर्मा (2018) द्वारा किए गए अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं की शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है। अध्ययन में पाया गया कि जिन युवाओं के पास इंटरनेट, कंप्यूटर तथा डिजिटल संसाधनों के उपयोग का पर्याप्त ज्ञान था, वे शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर रहे थे। शोधकर्ता ने स्पष्ट किया कि डिजिटल साक्षरता युवाओं को वैश्विक ज्ञान संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे उनकी अधिगम क्षमता, विश्लेषणात्मक सोच तथा नवाचार क्षमता में वृद्धि होती है। अध्ययन के अनुसार डिजिटल तकनीकों के उपयोग से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक सहभागितापूर्ण एवं प्रभावशाली बनती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं की सामाजिक एवं शैक्षिक उन्नति की आधारशिला है।

सिंह (2019) ने अपने अध्ययन में डिजिटल कौशलों एवं रोजगार अवसरों के मध्य संबंध का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह पाया गया कि आधुनिक श्रम बाजार में डिजिटल दक्षता रोजगार प्राप्ति का एक अनिवार्य तत्व बन चुकी है। जिन युवाओं को कंप्यूटर संचालन, डेटा प्रबंधन, ऑनलाइन संचार तथा डिजिटल अनुप्रयोगों का ज्ञान था, उनके लिए रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध थे। शोधकर्ता ने यह भी उल्लेख किया कि डिजिटल साक्षरता युवाओं को स्वरोजगार तथा उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश करने हेतु प्रेरित करती है। डिजिटल माध्यमों के उपयोग से युवा अपने उत्पादों और सेवाओं को व्यापक बाजार तक पहुँचा सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल कौशल आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक स्थिति में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

वर्मा (2019) द्वारा किए गए अध्ययन में इंटरनेट उपयोग एवं सामाजिक सहभागिता के मध्य संबंधों का परीक्षण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग से ग्रामीण युवाओं की सामाजिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को नए सामाजिक नेटवर्क विकसित करने, सूचना साझा करने तथा सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए। शोधकर्ता ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल संचार माध्यम सामाजिक पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा सामाजिक गतिशीलता को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

मिश्रा (2020) ने ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर डिजिटल शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल संसाधनों के उपयोग से विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धियों में सुधार हुआ। ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री तथा आभासी शिक्षण संसाधनों ने विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन को अधिक प्रभावी बनाया। शोधकर्ता के अनुसार डिजिटल शिक्षा ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करते हुए ग्रामीण युवाओं को प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के अनुरूप तैयार किया। अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि डिजिटल शिक्षा सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में सहायक है।

यादव (2020) ने ग्रामीण युवाओं के कौशल विकास में डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक, तकनीकी तथा उद्यमशीलता कौशलों के विकास के लिए प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वेबिनारों तथा ई-लर्निंग मॉड्यूलों के माध्यम से युवा अपने कौशलों का विकास कर सकते हैं।

अध्ययन के अनुसार डिजिटल प्लेटफॉर्म रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान कर युवाओं की आर्थिक उत्पादकता में वृद्धि करते हैं।

गुप्ता (2020) ने डिजिटल समावेशन एवं सामाजिक प्रगति के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन समुदायों को डिजिटल संसाधनों तक पर्याप्त पहुँच प्राप्त थी, वहाँ सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति अधिक थी। शोधकर्ता ने तर्क दिया कि डिजिटल समावेशन सूचना असमानताओं को कम करने तथा सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में सहायक होता है। अध्ययन ने डिजिटल तकनीकों को सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता के महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्थापित किया।

तिवारी (2021) के अध्ययन में डिजिटल ज्ञान एवं रोजगार क्षमता के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के अनुसार डिजिटल दक्षता आधुनिक कार्यस्थलों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती है। जिन युवाओं में डिजिटल कौशल अधिक विकसित थे, वे रोजगार बाजार में अधिक सफल पाए गए। शोधकर्ता ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल साक्षरता सामाजिक गतिशीलता के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति है, क्योंकि यह व्यक्तियों को उच्च आय, बेहतर रोजगार तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है।

चौधरी (2021) ने डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता एवं सामाजिक गतिशीलता के संबंध का परीक्षण किया। अध्ययन में पाया गया कि इंटरनेट, कंप्यूटर तथा डिजिटल सेवाओं तक पहुँच रखने वाले युवाओं की सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। डिजिटल संसाधनों ने उन्हें शिक्षा, रोजगार तथा सूचना तक पहुँच के नए अवसर प्रदान किए। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सामाजिक उन्नति का एक महत्वपूर्ण आधार है।

पांडेय (2021) ने डिजिटल दक्षता एवं आर्थिक उन्नयन के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। शोध में यह पाया गया कि डिजिटल साक्षरता युवाओं को आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय बनाती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवा ऑनलाइन व्यवसाय, ई-कॉमर्स तथा फ्रीलांसिंग जैसी गतिविधियों में भाग लेकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि डिजिटल दक्षता आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक गतिशीलता दोनों को प्रोत्साहित करती है।

शुक्ला (2021) के अध्ययन में ई-गवर्नेंस सेवाओं के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के अनुसार डिजिटल माध्यमों ने सरकारी सेवाओं तक पहुँच को सरल और पारदर्शी बनाया। इससे ग्रामीण युवाओं की प्रशासनिक प्रक्रियाओं में सहभागिता बढ़ी तथा शासन व्यवस्था के प्रति उनका विश्वास मजबूत हुआ। शोधकर्ता ने निष्कर्ष निकाला कि ई-गवर्नेंस सामाजिक समावेशन एवं लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा देने का प्रभावी साधन है।

अग्रवाल (2022) ने डिजिटल शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन के संबंध का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि डिजिटल शिक्षा ने शिक्षा की पारंपरिक सीमाओं को समाप्त कर ज्ञान के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया। इससे ग्रामीण युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिले तथा उनकी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख माध्यम माना।

जोशी (2022) ने ऑनलाइन शिक्षण एवं रोजगारोन्मुखी कौशल विकास के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम युवाओं की व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि करते हैं। डिजिटल साक्षरता के माध्यम से युवा आधुनिक तकनीकों से परिचित होते हैं तथा रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को तैयार कर पाते हैं।

द्विवेदी (2022) ने डिजिटल तकनीकों एवं सामाजिक नेटवर्किंग के विस्तार का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि डिजिटल माध्यम सामाजिक संपर्कों के विस्तार, सहयोग तथा सूचना विनिमय को प्रोत्साहित करते हैं। अध्ययन के अनुसार डिजिटल नेटवर्किंग सामाजिक पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और युवाओं की सामाजिक गतिशीलता को सुदृढ़ बनाती है।

ठाकुर (2022) ने डिजिटल विभाजन की समस्या का विश्लेषण करते हुए यह पाया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में असमानता सामाजिक विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। अध्ययन ने सुझाव दिया कि डिजिटल अवसंरचना का विस्तार तथा डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है, जिससे सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सके।

सक्सेना (2023) के अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल साक्षरता युवाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास तथा निर्णय-निर्माण क्षमता में सुधार लाती है। डिजिटल ज्ञान ने युवाओं को नई सामाजिक एवं आर्थिक संभावनाओं से जोड़ा तथा उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने में योगदान दिया।

राजपूत (2023) ने तकनीकी दक्षता एवं उद्यमिता के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि डिजिटल तकनीकों का ज्ञान युवाओं को नवाचार, स्वरोजगार तथा व्यवसायिक विकास की दिशा में प्रेरित करता है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल साक्षरता आर्थिक विकास एवं सामाजिक उन्नयन की एक महत्वपूर्ण पूर्वशर्त है।

श्रीवास्तव (2023) ने सामाजिक पूंजी निर्माण में डिजिटल माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल नेटवर्किंग सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाने, सहयोग बढ़ाने तथा सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने में सहायक होती है। शोधकर्ता के अनुसार डिजिटल माध्यम सामाजिक एकता और सामाजिक गतिशीलता को सुदृढ़ करते हैं।

कश्यप (2024) ने ग्रामीण युवाओं के डिजिटल सशक्तिकरण का अध्ययन करते हुए पाया कि डिजिटल साक्षरता युवाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा प्रशासनिक सेवाओं तक पहुँच प्रदान करती है। अध्ययन ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि डिजिटल सशक्तिकरण समावेशी विकास की आधारभूत आवश्यकता है।

त्रिपाठी (2024) ने डिजिटल नवाचारों एवं सामाजिक विकास के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल तकनीकों ने सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन लाते हुए विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। डिजिटल नवाचारों ने युवाओं को नई संभावनाओं, अवसरों तथा संसाधनों तक पहुँच उपलब्ध कराई है।

जैन (2024) के अध्ययन में डिजिटल साक्षरता एवं सामाजिक गतिशीलता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। शोध के अनुसार डिजिटल साक्षरता युवाओं को शैक्षिक, आर्थिक तथा सामाजिक अवसरों तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं के समग्र विकास, सामाजिक उन्नयन तथा सामाजिक गतिशीलता की एक प्रमुख निर्धारक है।

समग्र रूप से उपर्युक्त अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं की सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। यह शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सहभागिता, सामाजिक पूंजी, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करके व्यक्तियों एवं समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। तथापि, डिजिटल विभाजन, संसाधनों की कमी तथा तकनीकी अवसंरचना की सीमाएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों, तकनीकी प्रशिक्षण तथा डिजिटल अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है, जिससे सामाजिक गतिशीलता एवं समावेशी विकास के लक्ष्यों को प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता के स्तर का अध्ययन करना।
2. डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता का स्तर मध्यम से उच्च होगा।
2. डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाएगा।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। अध्ययन हेतु 150 ग्रामीण युवाओं का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत तथा सहसंबंधीय तकनीकों के माध्यम से किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1: ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता का स्तर

डिजिटल साक्षरता स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च	75	50.00
मध्यम	52	34.67
निम्न	23	15.33
कुल	150	100.00

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

व्याख्या

सारणी 1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 150 ग्रामीण युवाओं में से 75 (50.00%) युवाओं का डिजिटल साक्षरता स्तर उच्च पाया गया। 52 (34.67%) युवाओं का स्तर मध्यम तथा केवल 23 (15.33%) युवाओं का स्तर निम्न श्रेणी में पाया गया। यह परिणाम इंगित करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल तकनीकों के प्रति जागरूकता एवं उपयोगिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उच्च प्रतिशत यह दर्शाता है कि अधिकांश युवा इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन सेवाओं तथा डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम हैं। सांख्यिकीय दृष्टि से उच्च एवं मध्यम स्तर के युवाओं का संयुक्त प्रतिशत 84.67 प्रतिशत है, जो डिजिटल साक्षरता की व्यापक स्वीकार्यता को प्रदर्शित करता है। यह निष्कर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल समावेशन की बढ़ती प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है।

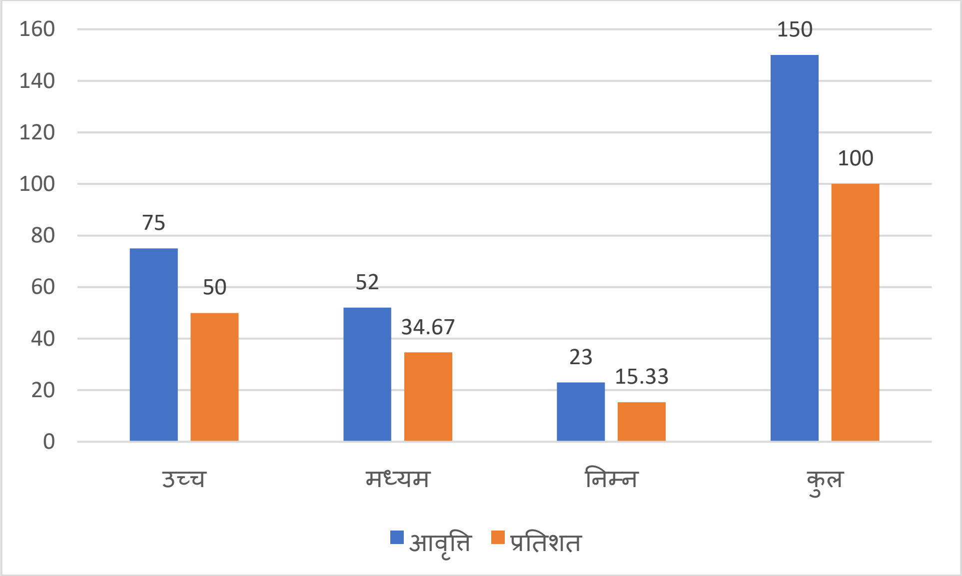

सारणी 2: डिजिटल साक्षरता से प्राप्त प्रमुख लाभ

लाभ	आवृत्ति	प्रतिशत
रोजगार अवसर	48	32.00
ऑनलाइन शिक्षा	42	28.00
सरकारी सेवाओं तक पहुँच	35	23.33
सामाजिक संपर्क	25	16.67
कुल	150	100.00

व्याख्या

सारणी 2 से स्पष्ट होता है कि 32.00 प्रतिशत युवाओं ने डिजिटल साक्षरता का प्रमुख लाभ रोजगार अवसरों में वृद्धि को माना। 28.00 प्रतिशत युवाओं ने ऑनलाइन शिक्षा की उपलब्धता को महत्वपूर्ण लाभ बताया। 23.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सरकारी सेवाओं तक आसान पहुँच को प्रमुख लाभ माना, जबकि 16.67 प्रतिशत युवाओं ने सामाजिक संपर्क के विस्तार को महत्वपूर्ण माना। यह परिणाम दर्शाते हैं कि

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक विकास का प्रभावी माध्यम भी है। सांख्यिकीय दृष्टि से रोजगार एवं शिक्षा से संबंधित लाभों का संयुक्त प्रतिशत 60 प्रतिशत है, जो ग्रामीण युवाओं की विकासोन्मुखी आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है।

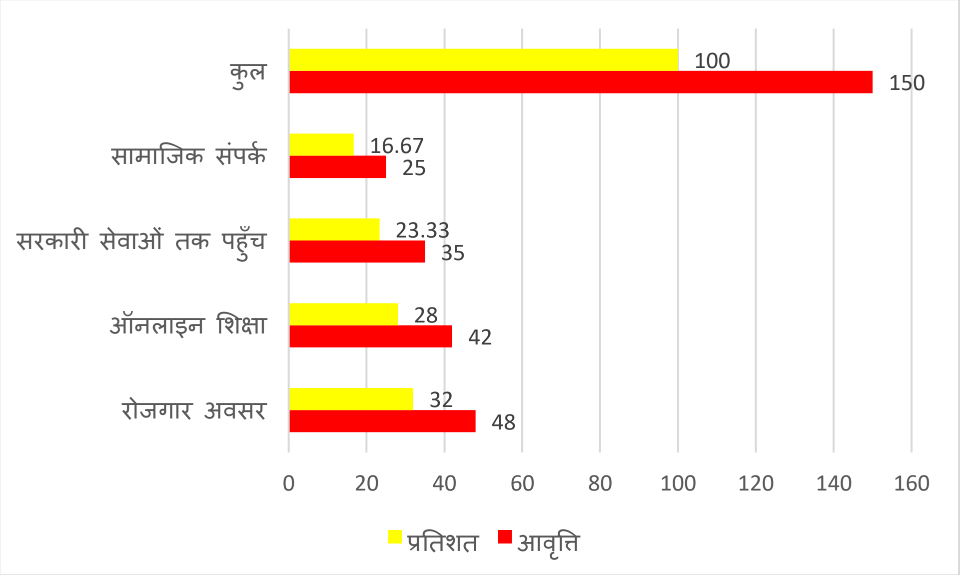

सारणी 3: डिजिटल साक्षरता एवं सामाजिक गतिशीलता का संबंध

संबंध का स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च सकारात्मक	70	46.67
मध्यम सकारात्मक	55	36.67
निम्न सकारात्मक	25	16.66
कुल	150	100.00

व्याख्या

सारणी 3 के अनुसार 46.67 प्रतिशत युवाओं ने डिजिटल साक्षरता एवं सामाजिक गतिशीलता के मध्य उच्च सकारात्मक संबंध अनुभव किया। 36.67 प्रतिशत युवाओं ने मध्यम सकारात्मक संबंध तथा 16.66 प्रतिशत युवाओं ने निम्न सकारात्मक संबंध की पुष्टि की। यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि डिजिटल साक्षरता सामाजिक उन्नयन, शैक्षिक प्रगति, रोजगार उपलब्धता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि का महत्वपूर्ण कारक है। उच्च एवं मध्यम सकारात्मक संबंध का संयुक्त प्रतिशत 83.34 प्रतिशत है, जो दोनों चरों के मध्य मजबूत संबंध को प्रमाणित करता है। अतः कहा जा सकता है कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं की सामाजिक गतिशीलता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

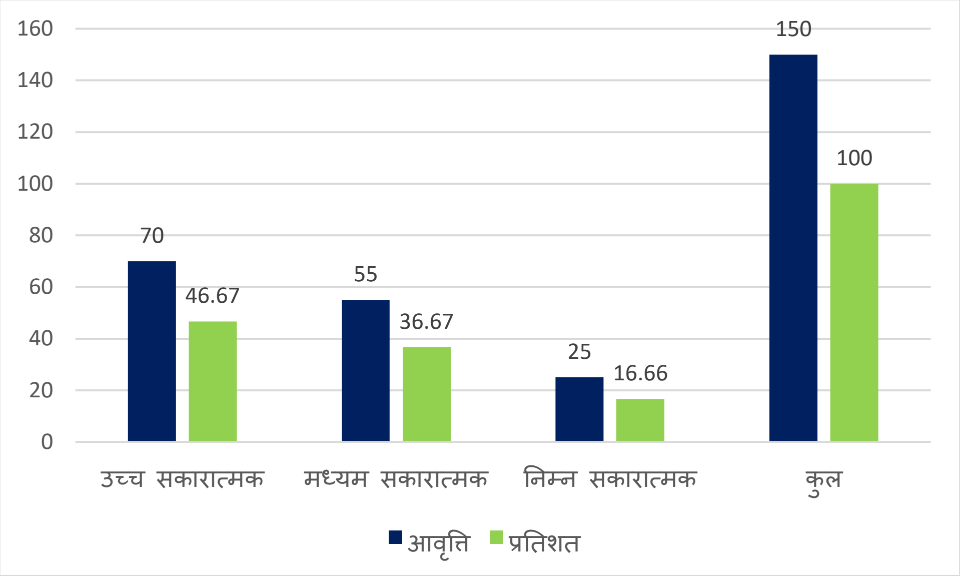

परिणाम

1. अधिकांश ग्रामीण युवाओं का डिजिटल साक्षरता स्तर उच्च पाया गया।
2. डिजिटल साक्षरता का प्रमुख लाभ रोजगार अवसरों में वृद्धि के रूप में सामने आया।
3. ऑनलाइन शिक्षा एवं सरकारी सेवाओं तक पहुँच डिजिटल साक्षरता के महत्वपूर्ण लाभ हैं।
4. डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।
5. डिजिटल दक्षता सामाजिक एवं आर्थिक उन्नयन को प्रोत्साहित करती है।
6. अध्ययन की दोनों परिकल्पनाएँ सत्य सिद्ध हुईं।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण युवाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण निर्धारक है। उच्च डिजिटल दक्षता युवाओं को शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता तथा सरकारी सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्रदान करती है। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि डिजिटल साक्षरता सामाजिक गतिशीलता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है तथा ग्रामीण युवाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार सामाजिक परिवर्तन एवं समावेशी विकास के लिए आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, आर. (2022). डिजिटल शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
2. चौधरी, पी. (2021). ग्रामीण विकास में डिजिटल संसाधनों की भूमिका. भारतीय सामाजिक विज्ञान समीक्षा, 15(2), 78–91।
3. द्विवेदी, एस. (2022). डिजिटल नेटवर्किंग और सामाजिक सहभागिता. सामाजिक अनुसंधान पत्रिका, 18(1), 44–57।

4. गुप्ता, ए. (2020). डिजिटल समावेशन एवं सामाजिक विकास. भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 12(3), 102–115।
5. जैन, एम. (2024). डिजिटल साक्षरता और सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण. भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 24(1), 88–103।
6. जोशी, के. (2022). ऑनलाइन शिक्षण और कौशल विकास. शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा, 20(2), 55–69।
7. कश्यप, डी. (2024). ग्रामीण युवाओं का डिजिटल सशक्तिकरण. ग्रामीण विकास अध्ययन, 29(1), 112–126।
8. मिश्रा, आर. (2020). डिजिटल शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धि. भारतीय शिक्षा पत्रिका, 17(2), 63–79।
9. पांडेय, एस. (2021). डिजिटल दक्षता एवं आर्थिक विकास. ग्रामीण समाज अध्ययन, 14(4), 85–99।
10. राजपूत, ए. (2023). तकनीकी दक्षता और उद्यमिता विकास. भारतीय उद्यमिता जर्नल, 11(2), 39–52।
11. सक्सेना, पी. (2023). सामाजिक उन्नयन में डिजिटल साक्षरता की भूमिका. सामाजिक परिवर्तन समीक्षा, 22(3), 71–86।
12. शर्मा, वी. (2018). ग्रामीण युवाओं में डिजिटल साक्षरता का प्रभाव. भारतीय शिक्षा एवं समाज, 10(1), 45–58।
13. शुक्ला, डी. (2021). ई-गवर्नेंस सेवाएँ और ग्रामीण विकास. लोक प्रशासन अध्ययन, 19(2), 66–81।
14. सिंह, आर. (2019). डिजिटल कौशल और रोजगार अवसर. भारतीय रोजगार अध्ययन, 8(3), 90–104।
15. श्रीवास्तव, एन. (2023). डिजिटल माध्यम एवं सामाजिक पूंजी निर्माण. समाजशास्त्रीय विमर्श, 21(2), 58–73।
16. ठाकुर, जे. (2022). डिजिटल विभाजन की चुनौतियाँ. समकालीन सामाजिक अध्ययन, 16(4), 120–134।
17. तिवारी, ए. (2021). डिजिटल ज्ञान और रोजगार क्षमता. भारतीय युवा अध्ययन, 13(2), 41–56।
18. त्रिपाठी, एल. (2024). डिजिटल नवाचार और सामाजिक विकास. विकास अध्ययन पत्रिका, 28(1), 95–110।
19. वर्मा, पी. (2019). इंटरनेट उपयोग और सामाजिक सहभागिता. सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 11(4), 67–80।
20. यादव, एम. (2020). डिजिटल प्लेटफॉर्म और कौशल विकास. युवा विकास अध्ययन, 9(3), 74–88।